

सीखने-सिखाने के एक संसाधन के रूप में विद्यार्थियों की भाषायी विविधता

शशि कुशवाहा*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा शिक्षा और भाषा अधिगम को बहुभाषावाद के रूप में वर्णित किया गया है। साथ ही, शिक्षण-अधिगम में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की बात कही गई है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस शोध-पत्र में वाराणसी शहर (जो कि विविध भाषायी संस्कृति से परिपूर्ण है) में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति के शोध अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में वाराणसी शहर के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) एवं यू.पी. बोर्ड से मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में से कक्षा 8 (सत्र 2019-2020) में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया था। आँकड़ों के संकलन हेतु भाषायी विविधता जाँच सूची नामक उपकरण का उपयोग किया गया था। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत के रूप में किया गया था। इस शोध अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा आठ में अध्ययनरत विद्यार्थियों में 21 भाषाओं की विविधता पाई गई। यह परिणाम शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, क्योंकि यदि शिक्षक को विविध भाषाओं के विभिन्न पक्षों, जैसे— रचनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यात्मक आदि का ज्ञान होगा तो शिक्षक कक्षा में इस विविधता को संसाधन के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

भारत विविधताओं से समृद्ध देश है और यही इसकी विशेषता भी है। यहाँ विविध धर्मों, जातियों, संप्रदायों एवं भाषाओं के लोग निवास करते हैं। भाषा शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम होती है। वास्तव में भाषा शिक्षा का आधार स्तंभ है, क्योंकि ज्ञान प्रदान करने, समझने एवं उसे अभिव्यक्त करने का प्रथम माध्यम भाषा ही है। मनुष्य को उत्कृष्ट सामाजिक जीवन जीने हेतु भाषा का विकसित एवं समृद्ध होना अत्यंत आवश्यक है। अतः विद्यालयों में बच्चों के

विकास के पूर्व-प्राथमिक स्तर से ही भाषा विकास को शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों के साथ जोड़ा गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भाषा के महत्व को सभी आयोगों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों द्वारा स्वीकार किया गया है। विशेष रूप से शिक्षा आयोग (1966) में त्रिभाषा सूत्र को सभी राज्यों द्वारा अपनाने तथा क्रियान्वयन का सुझाव दिया है। त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत विद्यालय व

विद्यार्थियों के बीच अंतर को दूर करने का अच्छा विकल्प है, क्योंकि बच्चा विद्यालय आने से पूर्व विभिन्न सामाजिक संबंधों के बीच अंतर्क्रिया करना सीख जाता है। उसकी चेतना जाग्रत होती है, उसकी स्थानीय संस्कृति व भाषा उसे प्रभावित करती है, चूँकि विद्यालय एक मानक भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों में परिवर्तन व विकास नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चे की मातृभाषा या स्थानीय भाषा को समझकर उसे विद्यालयी भाषा से जोड़ा जाए, जिसके लिए बहुभाषिकता बहुत उपयोगी होगी। इसी संदर्भ में *भारतीय भाषाओं का शिक्षण—राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र* (2009) में कहा गया है, “यदि हम चाहते हैं कि ऐसा जनतंत्र पनपे, जिसमें सभी की भागीदारी संभव हो सके, तो हमें प्रत्येक बच्चे को उसकी भाषा में सुनना होगा.... त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करने के लिए कड़े नियमों के बजाय बहुभाषिकता को बनाए रखने व इसे जीवंतता प्रदान करने का प्रयास किसी भी भाषा योजना का केंद्र होना चाहिए” (पृष्ठ 21)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी भाषा को कक्षा की कार्यनीति का मुख्य तत्व बताया गया है, “बहुभाषिकता, जो बच्चे की अस्मिता का निर्माण करती है और जो भारत के भाषा परिदृश्य का विशिष्ट परिलक्षण है, उसका संसाधन के रूप में उपयोग करना, कक्षा की कार्यनीति का हिस्सा बनाना तथा उसे लक्ष्य के रूप में रखना, रचनात्मक भाषा शिक्षक का कार्य है।” *भारतीय भाषाओं का शिक्षण—राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र* (2009) और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भाषा की भूमिका को सराहने के लिए समग्रवादी दृष्टिकोण अपनाने की

बात कही गई है। भाषा के रचनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यशास्त्र पक्षों को महत्व देते हुए इसे एक बहुआयामी रूप में देखा गया है, क्योंकि ये सभी आयाम भाषा को समाज से जोड़ने का कार्य करते हैं। इसलिए भाषा के सामाजिक परिवेश को समझना आवश्यक है, जिसके द्वारा हम बच्चे की मानसिक क्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं। समाज में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भाषा के माध्यम से करता है, क्योंकि यह सीखने, समझने, चिंतन करने तथा संपर्क व संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। भाषा विचारों के निर्माण व अभिव्यक्ति में प्रमुख भूमिका निभाती है।

अध्ययन की आवश्यकता

बहुभाषिकता पर हुए शोध अध्ययनों, यथा—पटनायक (1990), यूरोपीय कमीशन, एजुकेशन एंड कल्चर (2009), राजसेकन और कुमार (2020) में पाया गया कि बहुभाषिकतावाद एवं भाषिक व्यवहार की विविधता बहुभाषिक समाजों में संप्रेषण को बाधित करने के बजाय सहायता ही प्रदान करती है और साथ ही रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। जॉनसन और फ्लोरेस (1961), डिमोट (2001), अग्निहोत्री (1995) ने भाषायी जागरूकता और शिक्षा के विकास के लिए बहुभाषा सीखने पर बल दिया, जिससे विद्यार्थियों में भाषायी जागरूकता और वाक्य निर्माण व संरचना का विकास होता है। प्रपन्न (2006) ने अपने लेख में बताया है कि भाषायी विविधता हमारी भाषायी विविधतापूर्ण संस्कृति की पहचान है। बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास व शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक जुड़ाव है, जिससे विद्यार्थियों में अकादमिक स्तर में वृद्धि होती

है। **भारतीय भाषाओं का शिक्षण— राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र** (2009) में कहा गया है कि दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण रखते हैं, बल्कि शैक्षिक स्तर पर भी उनमें सामाजिकता और सहिष्णुता पाई गई है। भाषा की व्यवस्था पर व्यापक नियंत्रण उन्हें विविध प्रकार की एवं विविध स्तर की सामाजिक परिस्थितियों से कुशलतापूर्वक जूझने में सहायक होता है। दो अलग-अलग भाषाओं में सोचने की क्षमता एक परिष्कृत मानसिक व्यायाम है, जो द्विभाषी बच्चे को स्वाभाविक रूप से करता है। शब्दावली व व्याकरण के दो सेट सीखने की क्रिया तथा संज्ञानात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में यह सुझाव दिया गया है कि बच्चों की प्रयोग की जाने वाली भाषा तथा शिक्षण के मध्य कोई अंतराल हो तो उसे समाप्त किया जाए।

उपरोक्त शोध अध्ययनों में भाषायी विविधता एवं बहुभाषिकता की महत्ता एवं भाषायी संरक्षण के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इस शोध-पत्र में वाराणसी शहर में स्थित कक्षा 8 के विद्यालयों में विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति का अध्ययन कर प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य

कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति का अध्ययन करना।

प्रमुख चर की संक्रियात्मक परिभाषा

इस शोध अध्ययन के प्रमुख चर की संक्रियात्मक परिभाषा इस प्रकार हैं—

भाषायी विविधता— भाषायी विविधता से तात्पर्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं से है।

प्रविधि

इस शोध अध्ययन में यथार्थ स्थिति को ज्ञात करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। न्यादर्श के रूप में वाराणसी शहर में स्थित सी.बी.एस.ई. एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, प्रयागराज (यू.पी. बोर्ड) के कुल उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से 10 प्रतिशत विद्यालयों (सी.बी.एस.ई. के 06 एवं यू.पी. बोर्ड के 14) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। चयनित विद्यालयों के कक्षा आठ के एक वर्ग (सेक्शन) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया, जिसके सभी विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया, जिसका विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1— चयनित न्यादर्श का विवरण

क्र.सं.	चयनित इकाई	यू.पी. बोर्ड	सी.बी.एस.ई.	योग
1.	कुल विद्यालयों की संख्या	140	60	200
2.	चयनित विद्यालयों की संख्या	14	06	20
3.	चयनित विद्यार्थियों की संख्या	605	285	890

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु कुशवाहा एवं सिंह (2018) द्वारा निर्मित भाषायी विविधता जाँच सूची नामक उपकरण का उपयोग किया गया था। इसके अंतर्गत कुल 25 भाषाओं (1. हिंदी 2. उर्दू 3. अंग्रेजी 4. भोजपुरी 5. बांग्ला 6. पंजाबी 7. गुजराती 8. संथाली 9. मैथिली 10. संस्कृत 11. सिंधी 12. तेलुगू 13. मणिपुरी 14. मलयालम 15. तमिल 16. कन्नड़ 17. असमिया 18. कोंकणी 19. बोडो 20. कश्मीरी 21. डोगरी

22. ओड़िया 23. मराठी 24. नेपाली तथा 25. मारवाड़ी) को क्रमशः 1 से 25 तक रखा गया है एवं क्रम 26 पर अन्य भाषा को निश्चित किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों की प्रकृति के अनुरूप आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि से किया गया, जिसका विवरण तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2— कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति

क्र. सं.	भाषा	संयुक्त रूप से पढ़ने, लिखने एवं बोलने की आवृत्ति व प्रतिशत	बोलने एवं देखकर लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	बोलकर पढ़ने की आवृत्ति व प्रतिशत	देखकर पढ़ने एवं लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र देखकर लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र पढ़ने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र बोलने की आवृत्ति व प्रतिशत
1.	हिंदी	884 (99.32%)	5 (0.56%)	1 (0.11%)	0	0	0	0
2.	उर्दू	86 (9.66%)	1 (0.11%)	0	3 (0.33%)	4 (0.44%)		21 (2.35%)
3.	अंग्रेजी	370 (41.57%)	2 (0.22%)	0	419 (47.07%)	87 (9.77%)	0	9 (1.01%)
4.	भोजपुरी	1 (0.11%)		0	0	1 (0.11%)		749 (84.15%)
5.	बांग्ला	47 (5.28%)	0	3 (0.33%)	0	1 (0.11%)	0	91 (10.22%)
6.	पंजाबी	28 (3.14%)	0	2 (0.22%)	1 (0.11%)	0	0	63 (7.07%)
7.	गुजराती	5 (0.56%)	0	1 (0.11%)	0	0	0	19 (2.13%)
8.	संथाली	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
9.	मैथिली	8 (0.89%)	0	1 (0.11%)	0	0	0	119 (13.37%)
10.	संस्कृत	64 (7.19%)	0	0	636 (71.46%)	141 (15.84%)	1 (0.11%)	0
11.	सिंधी	2 (0.22%)	0	0	0	0	0	36 (4.04%)
12.	तेलुगू	0	0	0	0	0	0	3 (0.33%)
13.	मणिपुरी	0	0	0	0	0	0	0
14.	मलयालम	0	0	0	0	0	0	0
15.	तमिल	0	0	0	0	0	0	6 (0.66%)

16.	कन्नड	0	0	0	0	0	0	1 (0.11%)
17.	असमिया	0	0	0	0	0	0	0
18.	कोंकणी	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
19.	बोडो	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
20.	कश्मीरी	0	0	0	0	0	0	12 (1.34%)
21.	डोगरी	0	0	0	0	0	0	0
22.	ओड़िया	2 (0.22%)	0	0	0	0	0	3 (0.33%)
23.	मराठी	8 (0.89%)	0	0	0	0	0	21 (2.35%)
24.	नेपाली	0	0	0	0	0	0	26 (2.92%)
25.	मारवाड़ी	0	0	0	0	0	0	8 (0.89%)

तालिका 2 में भाषाओं के समक्ष दी गई संख्या आवृत्तियाँ एवं कोष्ठक में प्रतिशत को दर्शाया गया है। इस तालिका में दिए गए आँकड़ों की आवृत्तियों एवं प्रतिशत के अनुसार वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 में विद्यार्थियों की भाषायी विविधता के संदर्भ में 25 भाषाओं में से 21 भाषाओं (हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, भोजपुरी, बांग्ला, पंजाबी, गुजराती, संथाली, मैथिली, संस्कृत, सिंधी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़, कोंकणी, बोडो, कश्मीरी, ओड़िया, मराठी, नेपाली, मारवाड़ी) को विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किया जाता है, जबकि मणिपुरी, मलयालम, असमिया एवं डोगरी भाषा प्रयोग कोई भी विद्यार्थी नहीं करता है। विद्यार्थियों द्वारा 21 भाषाओं के प्रयोग को तालिका 1 में दिए गए 7 प्रकारों के आधार पर आँकड़ों एवं उनके प्रतिशत की व्याख्या करते हुए प्रस्तुत किया गया है—

- संयुक्त रूप से बोलने, पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 12 भाषाओं की पहचान की गई है, जिनमें हिंदी भाषा का सर्वाधिक 99.32 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 41.57 प्रतिशत इसी

प्रकार अन्य भाषाओं का क्रम क्रमशः उर्दू 9.66 प्रतिशत, संस्कृत 7.19 प्रतिशत, बांग्ला 5.28 प्रतिशत, पंजाबी 3.14 प्रतिशत, मैथिली 0.89 प्रतिशत, मराठी 0.89 प्रतिशत, गुजराती 0.56 प्रतिशत, भोजपुरी 0.11 प्रतिशत, ओड़िया 0.22 प्रतिशत पाया गया।

- बोलने के साथ देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 03 भाषाओं की पहचान की गई, जिनमें हिंदी भाषा का सर्वाधिक 0.56 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 0.22 प्रतिशत एवं उर्दू भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।
- बोलने के साथ पढ़ने की स्थिति के संदर्भ में कुल 06 भाषाओं की पहचान की गई, जिनमें बांग्ला भाषा का सर्वाधिक 0.33 प्रतिशत पाया गया। जबकि पंजाबी भाषा का 0.22 प्रतिशत, हिंदी भाषा का 0.11 प्रतिशत, मैथिली का 0.11 गुजराती का 0.11 एवं मैथिली भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।
- बिना समझ के देखकर पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई। इनमें संस्कृत भाषा का सर्वाधिक 71.46

प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 47.07 प्रतिशत, उर्दू भाषा का 0.33 प्रतिशत एवं पंजाबी भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।

- मात्र देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई। इसमें संस्कृत भाषा का सर्वाधिक 15.84 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 9.77 प्रतिशत, उर्दू भाषा का 0.44 प्रतिशत एवं बांग्ला भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।
- बिना समझ के साथ मात्र पढ़ने की स्थिति के संदर्भ में केवल 01 भाषा संस्कृत की पहचान की गई। इसका 0.11 प्रतिशत पाया गया।
- मात्र बोलने की स्थिति के संदर्भ में कुल 19 भाषाओं की पहचान की गई। इसमें भोजपुरी भाषा का सर्वाधिक 84.15 प्रतिशत पाया गया। जबकि मैथिली भाषा का 13.37 प्रतिशत, इसी प्रकार अन्य भाषाओं का क्रम क्रमशः बांग्ला भाषा का 10.22 प्रतिशत, पंजाबी भाषा का 7.07 प्रतिशत, सिंधी भाषा का 4.04 प्रतिशत, नेपाली भाषा का 2.92 प्रतिशत, उर्दू भाषा का 2.35 प्रतिशत, मराठी भाषा का 2.35 प्रतिशत, गुजराती भाषा का 2.13 प्रतिशत, कश्मीरी भाषा का 1.34 प्रतिशत, अंग्रेजी भाषा का 1.01 प्रतिशत, मारवाड़ी भाषा का 0.89 प्रतिशत, तेलुगू भाषा का 0.33 प्रतिशत, तमिल भाषा का 0.33 प्रतिशत, ओड़िया भाषा का 0.33 प्रतिशत, संथाली भाषा का 0.22 प्रतिशत, कोंकणी भाषा का 0.22 प्रतिशत, बोडो भाषा का 0.22 प्रतिशत एवं कन्नड़ भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।

विवेचना एवं निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषणोपरांत प्राप्त परिणामों से यह विदित होता है कि वाराणसी शहर में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में स्थित कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच भाषायी विविधता मौजूद है। जिसका विवरण इस प्रकार है—

- विद्यार्थियों द्वारा 25 भाषाओं में से 21 भाषाओं (हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, भोजपुरी, बांग्ला, पंजाबी, गुजराती, संथाली, मैथिली, संस्कृत, सिंधी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़, कोंकणी, बोडो, कश्मीरी, ओड़िया, मराठी, नेपाली, मारवाड़ी) का उपयोग करना पाया गया। जबकि 4 भाषाओं— मणिपुरी, मलयालम, असमिया एवं डोगरी भाषा का प्रयोग करने वाले कोई भी विद्यार्थी नहीं पाए गए।
- विद्यार्थियों द्वारा 21 भाषाओं के प्रयोग के रूप में तथा बोलने के रूप में कुल 19 भाषाओं की पहचान की गई, क्योंकि ये इनकी मातृभाषा होने के कारण इन्हें घर पर तो बोलना जानते हैं, लेकिन पढ़ना-लिखना नहीं जानते।
- संयुक्त रूप से पढ़ने, लिखने एवं बोलने की स्थिति में केवल 12 भाषाओं की पहचान हुई, जिनमें से केवल 6 भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, बांग्ला एवं पंजाबी) को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है एवं अन्य 6 भाषाओं का ज्ञान घर या अन्य प्रदेशों में प्राप्त शिक्षा से हुआ है, इन विद्यार्थियों को वर्तमान समय में इन भाषाओं के अध्ययन की कोई सुविधा प्राप्त नहीं है।
- इसी क्रम में बोलने एवं देखकर लिखने (नकल) की स्थिति में कुल 03 भाषाओं जिनमें हिंदी,

अंग्रेजी एवं उर्दू भाषाओं की पहचान की गई। इन विद्यालयों में इन भाषाओं को पढ़ाया जाता है, लेकिन इन भाषाओं को पढ़ने में कुछ विद्यार्थियों को समस्या का सामना करना पड़ता है।

- केवल बोलने के साथ कुछ-कुछ पढ़ने की स्थिति में 5 भाषाओं बांग्ला, पंजाबी, हिंदी, गुजराती एवं मैथिली की पहचान की गई। इन विद्यार्थियों की मातृभाषा होने के कारण बोलने में तो दक्षता प्राप्त है व सरल वाक्यों को पढ़ना आता है, लेकिन लेखन में समस्या होती है।
- बिना समझ के साथ पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 04 भाषाओं संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू एवं पंजाबी की पहचान की गई।
- मात्र देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के संदर्भ में कुल 04 भाषाओं संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू एवं बांग्ला की पहचान की गई।
- बिना समझ के साथ मात्र पढ़ने की स्थिति के संदर्भ में केवल संस्कृत की पहचान की गई।

वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कक्षा आठ में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच में भाषायी विविधता व्याप्त है। इनमें से कुछ विद्यार्थियों के घर में प्रयोग की जाने वाली भाषा विद्यालय में माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा से अलग पाई गई। साथ ही, उनकी घर की भाषा का प्रयोग कक्षाओं में नहीं किया जाता है। यहाँ के विद्यालयों में हिंदी एवं अंग्रेजी को माध्यम भाषा के रूप में अपनाया गया है, जबकि विषय के रूप में हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के अलावा कुछ विद्यालयों में उर्दू, बांग्ला एवं पंजाबी भाषा को पढ़ाया जाता है। सिन्हा (2006) ने विद्यालयों में प्रयोग की जाने वाली

15 भाषाओं की पहचान की एवं आचार्य (2016) ने भी अपने अध्ययन में वाराणसी शहर के विद्यालयों में प्रयोग की जाने वाली 13 भाषाओं की पहचान की, जबकि इस शोध अध्ययन में 21 भाषाओं की विविधता पाई गई। सभी विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि द्विभाषी या बहुभाषी पाई गई। इन भाषाओं को बोलने वाले विद्यार्थियों का हिंदी एवं अंग्रेजी की ओर झुकाव तेजी से बढ़ रहा है। अधिकांश विद्यार्थी समूह भोजपुरी पृष्ठभूमि से संबंधित थे, लेकिन इसका प्रयोग कक्षा में नहीं किया जाता है। इसी प्रकार के प्रतिबंध को अवतंस (2008) ने भाषायी संकट की संज्ञा दी है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि विभिन्न भाषाओं को जानने वालों का सामाजिक एवं शैक्षिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। बहुभाषिकता पर हुए शोध अध्ययनों में पाया गया कि बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास व शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से जोड़ने का कार्य करता है, जिससे उनके शैक्षिक स्तर में वृद्धि होती है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* एवं *भारतीय भाषाओं का शिक्षण—राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र* (2009), जॉनसन (2015) में भी बहुभाषिकता को कक्षा में शिक्षण में अपनाने पर बल दिया गया है, जिससे विविध भाषा के साथ विविध प्रकार की सोच में और अच्छा प्रदर्शन किया जा सके।

शैक्षिक निहितार्थ

शोध से प्राप्त परिणामों के शैक्षिक निहितार्थ शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, क्योंकि शिक्षक को यदि कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की जानकारी होगी तो उसे कक्षा में शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसा करने

से बहुभाषी समावेशी कक्षा का निर्माण किया जा सकेगा। साथ ही शिक्षक को भाषा के विविध पक्षों (रचनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यात्मक आदि) का ज्ञान होगा, जिससे वह इस विविधता को संसाधन के रूप में उपयोग कर कक्षा की कार्यनीति व शिक्षक-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाने में सहायक होगा। इसके लिए शिक्षक कक्षा में स्थानीय भाषा के साथ अन्य मौजूद भाषाओं पर आधारित ज्ञान को साझा करने का अवसर प्रदान करें, जिससे बच्चे उस ज्ञान का प्रयोग विषयगत अवधारणाओं को समझने में कर सकें। इस शोध अध्ययन के परिणाम कक्षा में अध्यापकों को विद्यार्थियों की भाषायी विविधता के प्रति

सकारात्मक अभिवृत्ति बनाने में सहायक सिद्ध होंगे। साथ ही शिक्षकों द्वारा भाषायी विविधता को सशक्त रूप में स्वीकार करते हुए पठन-पाठन को रुचिकर एवं उद्देश्यपरक बनाया जा सकेगा। शिक्षक बहुभाषा के प्रयोग से बच्चों को बेहतर पढ़ने और लिखने के कौशलों को सीखने में सहायता कर सकते हैं। इसके लिए शिक्षक भाषायी विविधता को अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करें, जिससे विद्यार्थी अपनी भाषा के माध्यम से सहज और प्रभावी ढंग से सीख सके। इसी अवधारणा को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बढ़ावा देते हुए बहुभाषिता को बच्चे के समग्र विकास का सशक्त माध्यम बताया गया है।

संदर्भ

- अवतंस, अभिषेक. 2008. भाषायी विविधता और ज्ञानपोषित समाज. 13 जून 2018 को <https://avtans.com/07/10/2008/%E0%A%4AD%E0%A%4BE%E0%A%4B%7E%E0%A%4BE%E0%A%-88%4E%0A%4B%5E%E0%A%4BF%E0%A%4B%5E%E0%A%4BF%E0%A%4A%7E%E0%A%4A%4E%E0%A%4BE-%E0%A%94%4E%E0%A%4B%-0E%E0%A9%4C%E0%A8%5D%E0%A9%4E%E0%A%4BE%E0%A%4A%8E%E0%A%4A%E0%A8%5B/> से प्राप्त किया गया था.
- अग्निहोत्री, रमाकांत. 1995. बहुभाषिकता— एक कक्षा स्रोत. अनुवादक— निशी तिवारी. शैक्षणिक संदर्भ. अंक 28 (85). पृष्ठ संख्या. 43–53. 13 मई 2023 को <https://www.eklavya.in/pdfs/sandarbh/sandarbh-85/43-53multilingualism-A-classroom-Resource.pdf> से प्राप्त किया गया.
- आचार्य, अंकिता. 2016. वाराणसी शहर के मुख्य अल्पसंख्यक भाषा-भाषी समुदायों का समाजभाषिक अनुशीलन (अप्रकाशित शोध-प्रबंध). भाषा विज्ञान, लखनऊ विश्वविद्यालय. 25 मई 2023 को <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/43680> से प्राप्त किया गया.
- जॉनसन, टाव. 2015. मल्टीकल्चर इज नॉट प्राब्लम बट द डाइवर्स बैकग्राउंड्स आर— ए स्टडी एबाउट फाइव टीचर्स थॉट्स एबाउट मल्टीकल्चर टीचिंग इन गर्वनमेंट स्कूल इन बनारस. डिग्री पेपर, 15 एच.पी. टीचर प्रोग्राम. 16 सितंबर 2019 को <https://www.divaportal.org/smash/get/diva2:787075/FULLTEXT01.pdf> से प्राप्त किया गया.
- जॉनसन और फ्लोरेंस. 1961. द इफेक्ट ऑफ फोरेल लैंग्विज इंस्ट्रक्शन ऑफ बेसिक ऐजुकेशन इन प्राइमरी स्कूल्स. जर्नल ऑफ मॉडर्न लैंग्विजिज-45(5).

- डिमोट, एल. 2001. द कॉन्ट्रीब्यूशन ऑफ बाइलिंगुअल लर्निंग टू द डवलपमेंट ऑफ लिंग्विस्टिक अवेयरनेस एंड एजुकेशन. 36(4).
- दास, नीना. 2019. लिंग्विस्टिकलि रिस्पोंसिव टीचिंग फ्रेमवर्क फॉर मल्टीलिंगुअल कॉटेक्स्ट्स— प्रॉब्लम्स एंड इश्यू विद रेफरेंस टू मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन इंकलूसिव क्लासरूम. *जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च*. वॉल्यूम 6. अंक 1. 20 मई 2023 को https://www.academia.edu/38465759/Problems_and_Issues_with_Reference_To_Multi-Lingual_Education_in_Inclusive_Classroom से प्राप्त किया गया.
- पटनायक, डी.पी. 1990. मल्टीलिंगुअलिज्म इन इण्डिया. समीक्षक— एंटोनी जॉन कुनान. *इश्यूज इन अप्लाइड लिंग्विस्टिक जर्नल*. वॉल्यूम 3(1). 2 नवंबर 2019 को <https://escholarship.org/uc/item/541548n0> से प्राप्त किया गया.
- प्रपन्न, कौशलेंद्र. 2006. भाषायी विविधता का उत्सव. 19 अप्रैल 2023 को [gadyakosh.org/gk./](http://gadyakosh.org/gk/) से प्राप्त किया गया.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. 8 जून 2023 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया.
- यूरोपीय कमीशन, एजुकेशन एंड कल्चर. 2009. स्टडी ऑन द कंट्रीब्यूशन ऑफ मल्टीलिंगुअलिज्म टू क्रिएटिविटी रिपोर्ट पब्लिक सर्विस कॉन्ट्रैक्ट. 12 मई 2023 को http://www.dylan-project.org/Dylan_en/news/assets/Study_Multilingualism_report_en.pdf से प्राप्त किया गया.
- रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.
- . 2009. भारतीय भाषाओं का शिक्षण— राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.
- राजसेकन, सुभाषिनी और राजेश कुमार. 2020. चैलेंजेस एंड स्ट्रेटेजी फॉर मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन इंडिया. *अ जर्नल ऑफ टीचिंग इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर*. 18 अक्टूबर 2019 को <http://www.fortell.org/content/challenges-and-strategies-multilingual-education-india> से प्राप्त किया गया.
- सिन्हा, अंजलि. 2006. मल्टीलिंगुअलिज्म इन अर्बन वाराणसी (अप्रकाशित शोध प्रबंध). लिंग्विस्टिक विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय.